उपसंहार-

मनुष्य के जीवन में भाषा विचारों का आदान-प्रदान करने का सबसे प्रमुख साधन माना जाता है। भाषा के जरिए ही मनुष्य अपनी बात को एक दूसरे तक पहुँचा सकता है। इस भाषा का प्रयोग जब मनुष्य अपने व्यवहार में करता है तब उस भाषा के विविध रूपों का प्रयोग अपने व्यवहार में करता है। अर्थात किसी भाषा का एक ही रूप का प्रयोग मनुष्य अपने सीमित क्षेत्र में नहीं करता। कभी वह औपचारिक रूप में उसका प्रयोग करता हैं तो कभी अनौपचारिक रूप में।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में "वर्धा शहर के माध्यमिक स्कूलों में हिंदी भाषा शिक्षण की समस्याएँ" दो कौशल (पठन और लेखन कौशल) इस विषय पर निष्कर्ष के रूप में मुझे यह ज्ञात हुआ की, छठी कक्षा के मराठीभाषी विद्यार्थी जब हिंदी भाषा सीखते हैं तो उन्हें किस-किस प्रकार कि समस्याएँ आती है- मराठीभाषी विद्यार्थी हिंदी भाषा का जो उच्चारण करते है उसी को ही वह लिपिबद्ध करने का प्रयास करते हैं जिस प्रकार की भाषा छात्र सुनता है उसी प्रकार भाषा वह ग्रहण करता है| क्यूँकी छात्र के मस्तिष्क तथा हृदय पर मातृभाषा का प्रभाव पहले से ही रहता हैं | यही प्रभाव अन्य भाषा सीखने में उच्चारण तथा व्याकरण संबंधी व्याघात या समस्याएँ उत्पन्न करता है | अन्य भाषा सीखने में मातृभाषा का व्याघात सबसे बड़ा कारण है | मातृभाषा में सीखे गए नियमों को वह द्वितीय भाषा के रूप में प्रयोग करता है| इसलिए

द्वितीय भाषा सीखने में मराठीभाषी विद्यार्थी गलतियाँ करते है | ध्वनियों को पहचानना सीखना ही पर्याप्त नहीं हैं बल्कि उनका सही उच्चारण सीखना भी आवश्यक है | ध्वनियों को पहचानने की असमर्थता और अन्य भाषा की ध्वनियों को मातृभाषा के रूप में ही वह ग्रहण करने का प्रयत्न करता है| हिंदी भाषा को विकसित करने के लिए छात्र में भाषा शिक्षण के चारों भाषाई कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) को विकसित करना होगा |

इसी संदर्भगत पहलूओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध की सर्जना की गई है |